

निपाह वायरस संक्रमण

निपाह वायरस संक्रमण एक उभरती हुई जूनोटिक बीमारी है। फल चमगादड़ों इस वायरस के प्राकृतिक मेजबान माना जाता है। इसकी पहचान सबसे पहले 1998-99 में मलेशिया और सिंगापुर में सुअर पालने वाले किसानों और सुअरों के करीबी संपर्क में आने वाले लोगों में फैलने के दौरान हुई थी। यह सुअर, घोड़े, बकरी, भेड़, बिल्ली और कुत्तों सहित कई तरह के जानवरों को प्रभावित कर सकता है। पिछले दो दशकों में, बांग्लादेश और भारत में इंसानों में निपाह वायरस संक्रमण के कई मामले दर्ज किए गए हैं।

फैलने का तरीका

इंसानों में संक्रमण मुख्य रूप से बीमार जानवरों के सीधे संपर्क में आने से उनकी दूषित सांस की बूंदों, नाक से निकलने वाले स्राव और टिशू के ज़रिए फैलता है। यह संक्रमित चमगादड़ों का मूत्र, गोबर या लार से दूषित खाना खाने से भी फैल सकता है, आमतौर पर फल या फलों के उत्पाद (खासकर कच्चे खजूर के रस)। इंसान से इंसान में फैलने का खतरा, संक्रमित लोगों के खराब स्राव और मल के करीबी संपर्क से भी हो सकता है, और मरीज़ के परिवार और स्वास्थ्य सेवा सेटिंग में भी मिली है।

नैदानिक विशेषताएं

मरीज़ बिना लक्षण वाले हो सकते हैं। शुरुआती लक्षणों में जुकाम जैसे लक्षण जैसे बुखार, सिरदर्द, उल्टी, गले में खराश और मांसपेशियों में दर्द। दूसरे लक्षणों में चक्कर आना, नींद आना और होश में कमी हैं। गंभीर मामलों में निमोनिया, दौरा, एन्सेफलाइटिस, कोमा और यहां तक कि मौत जैसी जटिलताएँ विकसित हो सकती हैं। मामले की मृत्यु दर लगभग 40% से 75% है। जो मरीज़ एक्पूट एन्सेफलाइटिस से बचने वाले मरीज़ों में से लगभग 20% को लगातार तंत्रिका संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

ऊष्मायन अवधि

लक्षण आमतौर पर संपर्क में आने के लगभग 4-14 दिनों के बाद दिखने लगते हैं, लेकिन यह 45 दिनों तक भी हो सकता है।

प्रबंध

अभी, निपाह वायरस संक्रमण के लिए कोई खास इलाज और दवा नहीं है। इलाज का मुख्य आधार सहायक देखभाल तक ही सीमित है।

बचाव

अभी निपाह वायरस संक्रमण से बचाव के लिए कोई वैक्सीन उपलब्ध नहीं है।

निपाह वायरस से प्रभावित जगहों पर जाते समय संक्रमण का खतरा कम करने के लिए लोगों को ये तरीके अपनाने चाहिए:

- जंगली जानवरों या खेत के बीमार जानवरों, खासकर चमगादड़, खेती करने वाले सूअर, घोड़े, पालतू और जंगली बिल्लियों के संपर्क में आने से बचें।
- उन जगहों से बचें जहाँ चमगादड़ रहते हैं।
- अच्छी व्यक्तिगत स्वच्छता का ध्यान रखें; हाथों को बार-बार तरल साबुन और पानी से धोएं, खासकर जानवरों या उनकी मल/स्राव के संपर्क में आने के बाद, और बीमार लोगों की देखभाल करने या उनसे मिलने के बाद।
- भोजन की स्वच्छता की अच्छी ध्यान रखें; फलों को खाने से पहले अच्छी तरह धोकर छील लेना चाहिए। चमगादड़ के काटने के निशान वाले या ज़मीन पर पड़े फलों को नहीं खाना चाहिए। कच्चे खजूर का रस, ताड़ी या दूसरा जूस पीने से बचें।

जिन लोगों को जानवरों या उनके टिशू को छूना पड़ता है, उन्हें ग्लव्स और दूसरे सही सुरक्षा वाले कपड़े पहनने चाहिए। जिन मरीजों को संदिग्ध या पुष्ट संक्रमण हुए हैं, उनकी देखभाल करने वाले स्वास्थ्य सेवा कर्मी हर समय संक्रमण की रोकथाम और नियंत्रण के उपाय सही तरीके अपनाने चाहिए।

Translated version is for reference only. In case of discrepancies between translated version and English version, English version shall prevail.

अनुवादित संस्करण केवल संदर्भ के लिए है। अनुवादित संस्करण और अंग्रेजी संस्करण के बीच विसंगतियों के मामले में, अंग्रेजी संस्करण मान्य होगा।

Revised in January 2026